अध्ययन 6

दूसरे मसीही विश्वासियों के साथ संगति रखना

पितृत्व और अंगीकरण

जब हम यीशु को प्रभु और उद्धार कर्त्ता करके ग्रहण करते हैं तब हम परमेश्वर के परिवार के हिस्सा बन गयें । परमेश्वर वास्तव में हमारा सच्चा पिता बन जाता है और हमें अपने पुत्रों के समान अंगीकर करता है । (गलतियों 3:26,27, 4:6–7) हम तो इस योग्य नहीं थे तथा निश्चित रुप से स्वाभाविक तौर पर हमने इसके लिये जन्म नहीं लिया था । परमेश्वर ने यह सब केवल यीशु के कारण से किया । कोई बात नहीं चाहे हम स्त्री हैं मसीह में अपने पुत्रों के समान । हम उसके लिये बहुत ही मूल्यवान है तथा वह हमसे सच्चे पिता के समान प्रेम रखता है । (देखें रोमियों 8:38,39) वह हमारी आगुवाई करता है, स्मरण करता है, हमे बलवन्त करता है तथा उत्तम रीति से जीवित रहने के लिये सहायता करता है हमारे लम्बे समय तक के भलाई के लिये। वह जानता है कि एक विशेष समय हम क्या सामना कर सकते है और वह यह भी जानता है कि कब हमें ताड़ना की आवश्यकता है । (देखें इब्रानियों 12:5–11) सच तो यह है कि वह हमारे जीवन में ऐसी बात आने देता है केवल हमारी भलाई के लिये । यदि हम उसकी आज्ञाओं पर चलते हैं । (रोमियों 8:28) वह यह भी चाहता है कि हम उसकी उपस्थिति में हियाव के साथ आवें तथा उस के साथ संगति कर सकें । (देखें इफिस्सियों 3:12)

हमें एक दूसरे की आवश्यकता है :—

एक परमेश्वर के परिवार के हिस्से होने के कारण, हम अपने स्वयं के द्वारा मसीही नहीं हो सकते । परमेश्वर ने हमेशा अपने लोगों को एक विशेष सम्बन्ध के लिये बुलाया अपने साथ तथा एक दूसरे के साथ रहने के लिये । हमें कोयला के समान होना चाहिए जो आग में गरम होकर चमकने लगता है । हम एक साथ एक दूसरे को गर्मी तथा प्रकाश पहुचाते हैं साथ साथ दूसरों को जो बाहर हैं उनहें आग । परन्तु यदि हम दूसरे मसीही विश्वासियों के संगति नहीं रखते हैं तो हम उस आग को खोने लगते हैं हम ठंढे होने लगते हैं । हमें दूसरे मसीह के अनुयापियों के साथ आग में प्रवेश करना आवश्यक है । सबसे उत्तम स्थान जहां हमें यह करना है वह कलीसिया है जहां यीशु को उद्धारकर्त्ता तथा प्रभु के रुप में प्रचार किया जाता है । स्मरण रखे कलीसिया वह मकान नहीं है परन्तु कलीसिया लोगों के समुदाय है जो यीशु के पीछे चलते हैं । एक नया मसीही होने के कारण आपको परमेश्वर की वचन से शिक्षा लेने की आवश्यकता है एवं आप को दूसरे लोगों की प्रोत्साहन की आवश्यकता है। जो आप के समान विश्वास करते है ।

परमेश्वर आप को जानता है

परमेश्वर ने आप को संयोग से नहीं चुना है । वह तो आप को जन्म से पहले से जानता है तथा वह यह भी जानता है कि आप कहां अच्छी तरह उसकी सेवा कर सकते हैं तथा उससे सीख सकते हैं ।

"मेरे मन का स्वामी तुहै, तु ने मुझे माता के गर्भ में रचा मैं तेरा धन्यवाद करुंगा, इसलिये कि मैं भयानक और अद्भुत रीति से रचा गया हुँ । तेरे काम तो आश्चर्य के हैं और मैं इसे भली भांति जानता हुँ । जब मैं गुप्त में बनाया जाता , और पृथ्वी के नीचे स्थनों में रचा जाता हथा, तब मेरी हड्डियां तुझ से छिपी न थीं । तेरी आंखों ने मेरें बेडौल तत्व को देखा और मेरे सब अंग तो दिन दिन बनते जाते थे

वे रचे जाने से पहले तेरी पुस्तक में लिखे हुए थे ।"

(भजन 139:13–16)

कलीसिया में परमेश्वर आप को ठहराता है, इस को आप की आवश्यकता है उतना आप की इसकी आवश्यकता है । परमेश्वर ने आप को एक विशष कार्य पूरा करने के लिये चुना है । इस कार्य के लिये आप सबसे अधिक योग्य व्यक्ति हैं इसलिये जो कुछ जानते हैं इसके द्वारा परमेश्वर आप से करना चाहता है । परमेश्वर के घर का सेवक बन जाओ न कि एक मुसाफिर । आप छोटें से छोटे कार्य भी करें जिसे आप आवश्यक समझते हैं, यदि आप के पास और दुसरा कार्य नहीं हैं । कलीसिया की सेवा करना परमेश्वर की सेवा करना है । आप के मसीही जीवन के आरम्भ में सम्भवतः परमेश्वर छोटा तथा साधारण कार्य करने के लिये कहेगा। जब आप इन बातों में अपने को विश्वास योग्य सिद्ध करेगा तो वह आप को और अधिक तथा उत्तम बातों में उत्तरदायी बनाएगा । वह अच्छी तरह जानता है कि आप क्या क्या सम्भाल सकते हैं ।

हमें कलीसिया की आवश्यकता हैं :–

यीशु मसीह की कलीसिया संसार में हरेक सच्चे मसीही लोगों से बनायी गई है । स्पष्ट रुप से इसके सब सदस्य एक साथ नहीं मिल सकते, अतः परमेश्वर ने उन्हें सम्पुर्ण विश्व में फैला दिया है स्बानीय कलीसिया के रुप में । ये स्थानीय कलीसियाए है जिस में हम परमेश्वर के परिवार के अंग होने के कारण उस में उपस्थित होने की आवश्यकता है । परमेश्वर ने स्थानीय कलीसियाओं को स्थापित किया है ताकि मसीही लोग समय बिताएँ ।

– एक दूसरे के साथ संगति रखने के लिये ।
– आत्मिक रीति से बढ़ते जाने के लिये ।
– परमेश्वर की सेवा करने के लिये ।
– परमेश्वर की आराधना करने के लिये ।
– तथा मसीही के उद्धार का सुसामाचार संसार में फैलाने के लिये ।

"और एक दूसरे के साथ इकट्ठा होना न छोड़े जैसे कि कितनों की रीति है, पर एक दूसरे को समझातें रहें, और ज्यों ज्यों उस दिन को निकट आते देखों, त्यों त्यों और भी अधिक यह किया करो ।"

(इब्रानियों 10:25)

देह का अंग

यीशु मसीह की कलीसिया को बाइबल में मसीह की देह के रुप में वर्णन किया गया है । (देखें इफिसियों 1:22,23) जिस प्रकार मनुष्य के अंग के कार्य समुह का है–इस के अंग केवल अपने लिये कोई कार्य नहीं करता ठीक इसी प्रकार कलीसिया का कार्य भी होना चाहिए । यीशु मसीह की कलीसिया के सदस्य एक दूसरे के लिये हैं अर्थात एक दूसरे के अंग हैं । (इफिसियों 4:25) तथा वे सब महत्त्वपुर्ण हैं । वस्तुतः हर एक अंग को कार्य करना है (इफिसियों 4:16) इसी के समान हम भी व्यक्तिगत रुप से तथा सजीवता के साथ मसीह की देह में स्थानीय रुप में शामिल हो जाएं ।

कलीसिया में आराघना

जब कलीसिया एक जगह जमा होती है तो यह बात जानना आवश्यक है कि हमें परमेश्वर की आराधना करने के लिये समय देना चाहिए । हम परमेश्वर की आराधना करते हैं केवल इसलिये नहीं कि उसने हमारे लिये क्या क्या किया है अथवा हमारे द्वारा किया है, परन्तु इसलिये कि वह कौन है। हम आत्मिक भजन, उपदेश, प्रकाश, तथा अन्य माला का अर्थ बताने के साथ इस आराधना में शामिल होने के लिये प्रोत्साहित किए जाते हैं । ताकि कलीसिया उन्नति कर सकें । (देखें 1 कुरिन्थियों 14:26)

इसका तात्पर्य व्यक्ति (लोग) है

जब हम मसीही विश्वासी होने के कारण एक जगह इकट्ठे होते हैं, वहां भवन महत्त्वपूर्ण हैं ।

यीशु ने कहा,

"क्योंकि जहां दो या तीन मेरे नाम पर इकट्ठे होते हैं वहां मैं उन के बीच में होता हूँ ।" (मत्ती 18:20)

अब हम विदेशी और मुसाफिर नहीं रहे, परन्तु परमेश्वर के घराने के हो गए जिसका केन्द्र यीशु मसीह है । यीशु मसीह में हम एक साथ मिल कर एक पवित्र मन्दिर बन जाते हैं जहां परमेश्वर आत्मा के द्वारा निवास करता है । (देखें इफिसियों 2:19–22) मसीह की देह अर्थात् कलीसिया में अपने विश्वास के विषय बताए तथा उन्हें भी आप के पास अपने विश्वास के विषय गवाही देने दें ।

प्रश्न तथा संकेतः

1. पढ़े इब्रानियों 10:23–25 तथा इन–प्रश्नों का उत्तर दें :
   क. क्या परमेश्वर विश्वासयोग्य (सच्चा) है ? (23 पद)
   ख. क्या हम एक दूसरे को उस्काने के लिये चिन्ता करें, तथा किस बात के लिये ? (24 पद)
   ग. क्या कलीसिया में उपस्थित होना अनिवार्य नहीं है ? अर्थात् इच्छानुसार है ? (25 पद)
2. क्या सभी मसीही विश्वासियों का स्थानीय कलीसिया में (मसीह के देह में) एक महत्त्वपूर्ण भाग (काम) है जिसे अपने जीवन के द्वारा पूरा करना है ? (रोमियों 12:3–8)
3. एक विश्वासी को अपने संगी विश्वासी के साथ कैसा वर्ताव करना चाहिए? (फिलिप्पियों 2:3)
4. आरम्भिक कलीसियाओं के लिये पौलुस की क्या इच्छा थी ? (1 कुरिन्थियों 1:10)
5. विश्वासियों के लिये एक साथ मिले रहना क्यों जरुरी है ? (रोमियों 15:5–6, यूहन्ना 17:20–23)
6. हमें कलीसिया के अगुवों के प्रति कैसा प्रति क्रिया दिखाना चाहिए ? (इब्रानियों 13:7)

7. आप अपनी स्थानीय कलीसिया में परमेश्वर के लिये क्या कर सकते हैं ?
8. पढ़े 1 कुरिन्थियों 12:12–27 और निम्नलिखित प्रश्नों का उत्तर दें :
   क. इस अवतरण में कलीसिया को किस के समान बताया गया है ?
   ख. व्यक्तिगत मसीही को कलीसिया में किस प्रकार के चीजों से तुलना किया गया है ?
   ग. क्या हम एक ही कार्य को करने के लिये सृजे गये हैं या भिन्न–भिन्न कार्य करने के लिये ?
   घ. क्या हम निर्णय लेते हैं कि कलीसिया में क्या काम करना है यदि नहीं तो कौन करता है ?
   ड. क्या कलीसिया को वैसा कार्य करना चाहिए जैसा इस को करना है, यदि हम ने कुछ नहीं किया था परमेश्वर के पीछे चलने के बजाय जो हम चाहते हैं वही करते है ?
   च. क्या हम कलीसिया सब बराबर महत्त्व के हैं चाहे जो भी कार्य हम करते हैं ?

प्रार्थना :–

सर्व शक्तिमान परमेश्वर अपने परिवार में तूने मुझे रखा इसलिये धन्यवाद देता हूँ । मैं तुझ से बिनती करता हूँ मुझे स्पष्ट दिखा कि विश्व व्यापी परिवार का तेरे प्रेम भाव मैं शामिल होउँ । मैं इस बात को महसूस करता हूँ कि मुझे अपने संभी विश्वासियों के साथ सम्बन्ध रखूं । मैं तुझ से यह भी प्रार्थना करता हूँ कि मुझे स्थायी मित्रता दे दे स्थानीय कलीसिया में जहां तू मुझे रखता है । मैं मसीह को देह के उस भाग का सेवा करना चाहता हूँ अपनी रीति के अनुसार क्योंकि मैं जानता हूँ जब मैं कलीसिया की सेवा करता हूँ तो तेरी सेवा करता हूँ । मैं यह प्रार्थना यीशु मसीह के बहुमुल्य नाम से करता हूँ । आमीन।